ॐ

श्रीवीतरागाय नमः

दौलत-जैनपदसंग्रह।

१

मंगलाचरण स्तुति।

दोहा।

सकल-ज्ञेय-ज्ञायक तदपि, निजानंदरसलीन।
सो जिनेन्द्र जयवंत नित, अरिरजरहस विहीन॥ १॥

पद्धरिछन्द।

जय वीतराग विज्ञानपूर। जय मोहतिमिरको हरन सूर॥ जय ज्ञान अनंतानंत धार। दृगसुख वीरज-मंडित अपार ॥२॥ जय परम शान्तिमुद्रा समेत। भविजनको निज-अनुभूतिहेत॥ भवि भागनवश जोगे वशाय। तुम धुनि ह्वै सुनि विभ्रम नसाय ॥३॥ तुम गुण चिंतत निजपर-विवेक। प्रगटै,

---

१ चार घातिया कर्मोंसे रहित। २ अनन्तदर्शन, अनन्तसुख, अनन्त वीर्य। ३ भव्यजनोंके भाग्यसे। ४ मनवचनकायके योगोंके कारण।